कर्णपर्व कथासार

इस पर्व में ९६ अध्याय ५१७५ हैं। आचार्य द्रोणाचार्य के मारे जाने के उपरान्त हतोत्साही दुर्योधन तथा अन्य राजा लोग द्रोणाचार्य के पुत्र अश्वत्थामा के पास गये। वहाँ पर दुःखी अश्वत्थामा को समझाये एवं सन्ध्या काल होने पर अपने अपने शिबिरों में चले गये। उन्होंने कर्ण को सेनापति के पद में नियुक्त किया। इसी प्रकार पाण्डव भी प्रातः काल की नित्य क्रिया करके युद्ध करने के लिए अपने शिबिरों से बाहर निकले। फिर कौरव और पाण्डवों का रोमाञ्चकारी भंयकर युद्ध हुआ। कर्ण के सेनापतित्व में दो दिन पर्यन्त अद्‌भुत युद्ध हुआ इसके उपरान्त धृतराष्ट्र के पुत्रों के देखते - देखते अर्जुन ने कर्ण को मार डाला। कुरुक्षेत्र के इस वृत्तान्त को सञ्जय ने धृतराष्ट्र को सुनाया।

उद्विग्न मन वाले सञ्जय धृतराष्ट्र के भवन में जाकर राजा के चारणों में प्रणाम किया। गङ्गानन्दन भीष्म तथा महाधनुर्धारी द्रोणाचार्य के मारे जाने से वह बहुत ही दुःखी था। धृतराष्ट्र ने युद्ध वृत्तान्त को विस्तार से सुनना चाहा। सञ्जय ने कहा कि हे राजन्! दैववश प्राप्त इस संकट से आप दुःखी न हो। महाधनुर्धारी द्रोणाचार्य के मारे जाने से तुम्हारे महारथी पुत्रों का मुख मलिन और विषण्ण हो गया। इन सब को दुःखी देखकर अन्य सेनायें भी दुःख से त्रस्त हो गयीं। उसी समय अनेक अपशकुन होने लगे।

महाधनुर्धारी द्रोणाचार्य के मारे जाने से कौरवों की सेना इधर उधर भागने लगी तब दुर्योधन ने बहुत ही पराक्रमपूर्वक यत्न करके अपनी सेना को स्थिर किया। अनन्तर सांयकाल होने पर कौरवों ने अपनी सेना के साथ शिबिरों में गये और अपने हित के लिए परस्पर विचार करने लगे। राजा दुर्योधन ने युद्ध की योजना के बारे में पूछा। द्रोणचार्य के पुत्र अश्वत्थामा बोले पण्डितों ने राजा के लिए अभीष्ट प्राप्ति के चार उपाय कहे हैं। राग (सैनिकों की स्वामिभक्ति), योग (साधनसम्पत्ति), दक्षता तथा नीति। परन्तु ये चारों उपाय प्ररब्ध के अधीन हैं। इस समय हमारी ओर के पराक्रमी जगत्प्रसिद्ध महारथी वीर मारे गये। परन्तु उनके मरने पर भी हमें विजय की आशा नहीं छोडनी चाहिए, क्यों कि नीतिपूर्वक किये गये प्रयत्न से प्रारब्ध भी अनुकूल हो जाता हैं। इस प्रकार हम सब लोग मनुष्यों में श्रेष्ठ, सर्व गुण सम्पन्न कर्ण को सेनापति बनाकर सब शत्रुओं का नाश करेंगें। गुरुपुत्र अश्वत्थामा के प्रिय एवं हितकर वचन को सुनकर दुर्योधन ने राधापुत्र कर्ण से कहा, हे महाबाहो! पहले भीष्म और द्रोण ये दो हमारे सेनापति हुए, परन्तु वे दोनों बूढे तथा अर्जुन के प्रति रक्षा भाव के कारण मारे गये। हे राधेय! अब तू उन से भी शक्तिशाली हो, इसलिए हमारे सेनापति बनो। पितामह भीष्म ने पाण्डवों को अपने पोते जान कर दस दिन तक उस महायुद्ध में उनकी रक्ष की। आचार्य द्रोणाचार्य ने भी शिष्य जानकर कुन्तीपुत्र पाण्डवों की युद्ध भूमि में रक्षा की। तुम युद्ध में नेता पुरुष के समान सेना संचालन की धुरा वहन करने के योग्य हो।

दुर्योधन के द्वारा कहे गये उत्साह वर्धक वचनों को सुनकर कर्ण बोले, हे गान्धारी पुत्र! हम ने तुम से पहले ही कहा था कि हम अकेले सब पाण्डवों को

उनके पुत्र और जनार्दन के सहित जीतेंगे। कर्ण के ऐसे वचन सुनकर राजा दुर्योधन ने अन्य राजाओं के साथ कर्ण को शास्त्रोक्त विधि से सेनापति के पद पर अभिषेक किया। सञ्जय ने कहा कि महाराज! कर्ण ने
सेनापति होकर सूर्योदय होते ही सेना को युद्ध के लिए तैयार होने की आज्ञा देकर मकर व्यूह द्वारा पाण्डवों को पराजय करने की इच्छा से प्रस्थान किया। मकर व्यूह के मुखभाग में कर्ण, नेत्रों के स्थान में शूर शकुनि और महारथी उलूक, सिर के स्थान में द्रोणपुत्रअश्वत्थामा, गले के भाग में दुर्योधन के सब भाई, पेट के स्थान में बहुत सेना के सहित राजा दुर्योधन, बायें पैर में कृतवर्मा, दाहिने पैर में कृपाचार्य, दोनो पैरों के पिछले भाग में शल्य व सुषेण तथा पुच्छभाग में चित्रसेन आदि खडे थे।

कौरवों के सैनापति कर्ण द्वारा रचे गये व्यूह को देखकर राजा युधिष्ठिर ने अर्जुन से कहा कि हे पार्थ! यह कौरव सेना इस समय हतवीर हैं और केवल ही एक मात्र महारथी शेष है। एक कर्ण के वध से हमारी विजय ध्रुव है, इसलिए व्यूह रचना करके विजयी बनो और बारह वर्ष से दुःख देने वाले शल्य से उद्धार करो। अग्रज युधिष्ठिर के कथन को सुनकर अर्जुन ने कौरवों के विरोध में अपनी सेना का अर्धचन्द्र व्यूह बनाया, इस व्यूह के बाईं ओर भीमसेन दाहिनी ओर महाधुनुर्धर धृष्टद्युम्न, मध्यमभाग में स्वयं अर्जुन तथा पृष्ठभाग में युधिष्ठिर, नकुल और सहदेव खडे हुए। इस प्रकार से उभय पक्षों में व्यूह रचना की गयी। दोनों पक्षों के बीच तुमुल युद्ध होने लगा। भीमसेन हाथी पर चढे हुए हाथ में तोमर और पाश लेकर मध्याह्न कालीन सूर्य की भाँति शत्रु सेना को तपाने लगा। भीमसेन को देखकर गजारूढ क्षेमधूर्ति उन की तरफ दौडा। दोनो ने एक दूसरे के हाथी का वध कर दिया और पैदल ही युद्ध करने लगे। भीमसेन ने गदा मार कर उसे प्राणरहित कर दिया। वीर कर्ण अपने तेज बाणों से युद्ध में पाण्डवों की सेना को मारने लगा। पाण्डवों ने भी कर्ण के सामने ही दुर्योधन की सेना का नाश करना प्रारम्भ कर दिया। नकुल कर्ण से, भीमसेन अश्वत्थामा से, सात्यकि विन्द और अनुविन्द से, युधिष्ठिर दुर्योधन से, धनञ्जय संशप्त गणों से, धृष्ठद्युम्न कृपाचार्य से, शिखण्डी कृतवर्मासे और सहदेव दुःशासन से युद्ध करने में संलग्न हो गये। सात्यकि ने केकयाधिपति विन्द और अनुविन्द की सेना का विनाश किया।

प्रतिविन्ध्य और चित्रसेन के मध्य भी द्वन्द्व युद्ध हुआ। प्रतिविन्ध्य ने तोमर के प्रहार द्वारा चित्रसेन को मार डाला। चित्रसेन रथ से पृथ्वी पर गिर पडा और मृत्यु को प्राप्त हो गया। चित्रसेन की मृत्यु से कौरव सेना पलायित हो गयी।

अश्वत्थामा ने भीमसेन से युद्ध किया। अश्वत्थामा ने शरजाल द्वारा भीमसेन को घेर दिया। भीम ने भी अश्वत्थामा को शरों से वेध दिया। इस प्रकार से दोनों महारथि एक दूसरे को बाणों की वर्षा करके घायल करने लगे। उन दोनों के तुमुल युद्ध को देखकर देवता भी चकित हो गये। अन्त में युद्ध से श्रान्त होकर दोनों वीर रथ के पृष्ठभाग में विद्यमान हुए। तब सारथि ने द्रोणपुत्र अश्वत्थामा को

अचेतन देख कर सेना द्वारा देखे जाते हुए रथ को रणक्षेत्र से दूर ले आया। उधर भीमसेन के सारथी ने भी भीम को रथ द्वारा शिबिर में ले गया।

अर्जुन ने संशप्तक सैन्य को प्रायः विध्वस्त कर दिया। संशप्तकों के घोर विनाश को देखकर सिद्ध, देवर्षि तथा चारणों के संघो ने कृष्णार्जुन की स्तुति की। गुरु पुत्र अश्वत्थामा को अर्जुन से युद्ध करने की इच्छा हुई वह अर्जुन के समीप आकर बोला कि हे पार्थ! यदि तुम अपने आत्मगत भावों से मुझे अतिथि मानते हो तो मेरे साथ युद्ध करो। आचार्य पुत्र के द्वारा
इस प्रकार युद्ध के लिए ललकारने पर संशप्तको छोडकर अर्जुन आचर्य पुत्र अश्वत्थामा के साथ युद्ध करने में प्रवृत्त हो गये। अर्जुन ने तीन भल्ल बाणों के प्रयास से अश्वत्थामा का धनुष काट दिया। इसके उपरान्त अश्वत्थामा ने अनेक दिव्यास्त्र चलाये, अर्जुन ने प्रत्युत्तर में दिव्यास्त्रों को चलाकर उन दिव्यास्त्रों का निवारण किया। लेकिन अर्जुन के बाणों से हतोत्साहित अश्वत्थामा पुनः अर्जुन से युद्ध न करके कर्ण की सेना में प्रवेश किया।

नकुल ने कर्ण से महान कौशल के साथ युद्ध किया। कर्ण ने पाण्डव सेना तथा नकुल ने दुर्योधन की सेना का अत्यधिक विनाश किया। कर्ण ने नकुल के धनुष को काट दिया और सारथि को मार डाला। नकुल ने परिघ लेकर कर्ण पर प्रहार करना चाहा परन्तु तत्पर कर्ण ने उसे भी तीक्ष्ण शरों से नष्ट कर दिया। इसके उपरान्त कर्ण ने नकुल को पकड कर कहा कि बलवान कौरव सेना के साथ युद्ध मत करना, शिबिर में चले जाओ अथवा कृष्णार्जुन के साथ रहो। इस प्रकार कहकर तथा कुन्ती को दिये गये वचनों का स्मरण करके कर्ण ने पराजित नकुल को छोड दिया।

जब दण्डधार ने पाण्डवों की सेना का भारी विनाश किया, भगवान कृष्ण ने अर्जुन के रथ को उस दण्डधार के तरफ ले गये और अर्जुन से बोले कि इस पराक्रमी दण्डधार को मार करके पीछे संशप्तक राजों को मारना। अर्जुन ने भी भगवान की आज्ञा के अनुसार उस वीर दण्डधार से भीषण युद्ध किया और अन्त में अर्धचन्द्र बाण के प्रहार से उसका सिर काट दिया। विजयी अर्जुन ने फिर संशप्तक सेना में आकर रथ को वक्र, अतिवक्र करके भीषण संहार प्रारम्भ किया। कृष्ण ने कहा कि हे अर्जुन! तुम इन संशप्तकों का शीघ्र विनाश करके कर्ण के वध का उद्यम करो। अर्जुन ने तेज शस्त्र चला कर संशप्तकों का विनाश किया।

दोनों सेनाओं के बीच इस प्रकार भीषण तथा दारुण युद्ध हुआ। दुर्योधन और युधिष्ठिर का द्वन्द्वयुद्ध भी अत्यधिक आकर्षक था। दोनों ने एक दूसरे पर अनेक शस्त्रास्त्रों का प्रयोग किया। दुर्योधन ने शक्ति का प्रयोग किया, युधिष्ठिर ने शक्ति का निवारण करके दुर्योधन के ऊपर तीक्ष्ण बाणों का प्रहार किया। दुर्योधन ने गदा लेकर युधिष्ठिर के ऊपर प्रहार किया, गदा के प्रहार से पीडित धर्मराज ने शक्ति का प्रयोग किया जिससे दुर्योधन रथ से गिर पडा और मोह को प्राप्त हुआ कृतवर्मा ने दुर्योधन को युद्धभूमि से शिबिर में ले आया।

इस प्रकार कर्ण के सेनापतित्व काल में दुर्योधन-अश्वत्थामा-कृपाचार्य-

दुःशासनादि का सात्यकि-भीम-धनञ्जय के साथ रोमाञ्चकारी युद्ध हुआ। सांयकाल दोनों पक्ष स्व शिबिर के लिए प्रस्थान किये।

रात्रि में सब सेना को सुलाकर प्रधन कौरव लोग एक डेरे में एकत्र होकर मन्त्रणा करने लगे। कर्ण उनसे बोला, अर्जुन स्वभाव से ही सदैव प्रसन्नशील, दृढ, दक्ष और धैर्यशील है और साथ ही श्रीकृष्ण उनको बीच-बीच में उपदेश भी करते रहते हैं। इसीलिए अर्जुन ने आज सहसा अस्त्रों का प्रयोग करते हमें ठगाया है, परन्तु राजन! कल मैं उनके सब संकल्पों को नष्ट कर दूँगा। कर्ण के ऐसे वचन सुनकर दुर्योधन अतिप्रसन्न हो कर सबको अपने-अपने शिबिर में जाकर सो जाने की आज्ञा दी। इस प्रकार रात्रि के व्यतीत हो जाने पर प्रातः काल होते ही कर्ण राजा दुर्योधन के पास गया और उनसे मिलकर कहने लगा। हे मित्र! आज हम यशस्वी
पाण्डुपुत्र अर्जुन के साथ युद्ध करेगें। हम उस वीर को आज युद्ध में मारेंगे या वह मुझे मारेगा। मैं आप को वचन देता हूँ कि आज युद्ध में अर्जुन को मारे बिना नही लौटेंगे। हे राजन! यदि मद्र नरेश शल्य मेरे सारथी बन जाते तो आप की विजय ध्रुव हैं। इसके लिए शल्य के पास जाकर प्रार्थना करनी चाहिए। कर्ण के इस प्रकार कहने पर दुर्योधन ने शल्य के पास जाकर सारथी बनने का प्रस्ताव रखा।

दुर्योधन के प्रास्ताव को सुनकर शल्य ने कहा कि हे राजन! तुम हमारा अपमान कर रहे हो। मैं कर्ण की गणना नहीं करता। वह हमारे सदृश वीर नहीं है। मैं संग्राम में सूत पुत्र का सारथी कदापि न बनूगाँ, और युद्ध न कर मैं आज ही अपने देश को लौट जाऊँगा। मद्रराज शल्य के क्रोध को देखकर बडे ही शान्त भाव से दुर्योधन ने निवेदन किया हे राजन! आप के महत्व और प्रताप को हम सब जानते हैं परन्तु कर्ण की रक्षा और मेरी विजय के लिए मेरा निवेदन स्वीकार कर लीजिए। आप कर्ण की अपेक्षा अत्यधिक बलशाली हैं। अश्वविद्या में आप कृष्ण से भी श्रेष्ठ हैं। दुर्योधन के नीतियुक्त वचनों से शल्य प्रसन्न होकर बोला, हे राजन! तुम्हारे कहने से मैं कर्ण का सारथीत्व स्वीकार करता हूँण। परन्तु युद्ध में जो हम कर्ण के हित की इच्छा से कठोर या कोमल वचन कहे वह सब तुम और कर्ण सर्वथा क्षमा करना। इस प्रकार शल्य के द्वारा सारथ्य स्वीकार कर लेने पर दुर्योधन ने कर्ण के पास आकर कहा हे कर्ण! मद्रराज शल्य तुम्हारा सारथ्य करेंगें और ये श्रीकृष्ण से बहुत अधिक गुणवान हैं।

इस प्रकार सारथ्य स्वीकार कर लेने के उपरान्त ऐकमत्य के अभाव से शल्य और कर्ण में संवाद चलता रहा। कर्ण ने आत्मगौरव का गान करते हुए कहा कि मैं आज अर्जुन का वध करुँगा, दुर्योधन का जय होगा, पाण्डव पराजित होंगे। इस पर कर्ण के आत्मगान का अनादर करते हुये शल्य ने अर्जुन के बल पराक्रम की प्रशंसा की। इस प्रकार कर्ण के साथ शल्य की असहमति पद-पद पर व्यक्त हुई।

युद्ध का प्रारम्भ होने पर सङ्कुल युद्ध द्वारा भीम ने कौरव की सेना का बहुत नाश किया, उसी बीच कर्ण भी वहाँ आगया और भीम से युद्ध करने लगा।

कर्ण ने नाराच बाणों से भीम को वेध दिया। इससे क्रोधित भीम ने पर्वतों का भेदन करने वाले बाण को धनुष पर चढाया और कर्ण का उद्देश्य कर छोड दिया। उस बाण से हत कर्ण संज्ञाहीन हो कर रथ के पृष्ठ भाग में बैठ गये। सारथि कर्ण को युद्ध भूमि से एकान्त देश में ले आया।

दुर्योधन ने अपनी सेना का उल्लास बढाते हुए कहा कि इस प्रकार के युद्ध का अवसर भाग्यवश प्राप्त होता है। इस समय स्वर्गद्वार खुला हुआ है, आप लोग शत्रु पर विजय प्राप्त कर निष्कण्टक पृथिवी प्राप्त करेंगे अथवा मृत्यु प्राप्त होने पर स्वर्ग को प्राप्त करेंगे। अश्वत्थामा ने कहा कि शस्त्र त्याग-हुए मेरे पिता को पाण्डवों के सेना नायक धृष्टद्युम्न ने मार डाला इसलिए आप लोगों से मैं सत्य प्रतिज्ञा करता हूँ कि धृष्टद्युम्न का वध मैं अवश्य ही करूँगा। दोनों सेनायें आपस में भिड गयी। अर्जुन ने अश्वत्थामा को जीत लेने के उपरान्त युधिष्ठिर को न देखकर चिन्तित हो वासुदेव से कहा, हे वासुदेव! धर्मराज युधिष्ठिर नहीं दीख रहे हैं। दुर्योधन की सेना का कोई वीर मुझ से युद्ध के लिए नहीं आ रहा है अतः आप धर्मराज के सन्निकट मुझे ले चलिए मैं उनके दर्शन के उपरान्त ही युद्ध करूँगा। कृष्ण अर्जुन का रथ वहाँ ले गये जहाँ
पर युधिष्ठिर दुर्योधन से तुमुल युद्ध कर रहा था। दुर्योधन युद्ध में पराजित हो रहा था। पीडित दुर्योधन की रक्षा उसी समय वहाँ आकर कर्ण ने किया। कर्ण ने पाण्डवों की सेना को नष्ट कर दिया। कर्ण ने धर्मराज युधिष्ठिर को भाले से प्रहार किया, जिससे घायल युधिष्ठिर बाहर जाने को उद्यत हुए परन्तु कौरवों ने प्रयास पूर्वक उन को जाने से रोक दिया। कर्ण के द्वारा ताडित युधिष्ठिर अस्वस्थ हो गये। इसी बीच दुर्योधन को भीम से युद्ध चल रहा था। भीम ने बडे ही पराक्रम से दुर्योधन से युद्ध किया जिससे उसकी भी स्थिति शोचनीय हो गयी थी। इसी बीच शल्य ने कर्ण से कहा कि हे राधेय! क्या आप युधिष्ठिर से युद्ध करेंगे अथवा अर्जुन से लडना चाहते हैं। अर्जुन के साथ युद्ध करके उपहास्य के पात्र बनोगे। इसलिए अर्जुन से युद्ध मत करो। दुर्योधन की रक्ष के लिए आप को भीमसेन के साथ युद्ध करना चाहिए। इस प्रकार शल्य के द्वारा कहे जाने पर कर्ण भीमसेन के साथ युद्ध करने के लिए चले गये। अर्जुन युधिष्ठिर को देखना चाहते थे। अत वह युद्ध का भार भीम के ऊपर छोडकर भाई को देखने के लिए धर्मराज के पास गये, उस समय धर्मराज कर्ण के बाण से अत्यन्त ही पीडा को प्राप्त कर रहे थे। अपने पास केशव और अर्जुन को आया हुआ देखकर युधिष्ठिर अत्यन्त ही प्रसन्न हुए और उन दोनों का अभिनन्दन किया। युधिष्ठिर ने कृष्ण से कहा कि हे वासुदेव! कर्ण ने मेरी पताका को काटकर सारथी तथा घोडों को मार करके धृष्टद्युम्न आदि के देखते हुए मुझे जीत लिया है। कर्ण ने मुझे बाणों से केवल न वेधा अपि तु अनेक कठोर वचन भी सुनाया। वह दुर्योधन के हित करने की सदा चेष्टा करता है। हे वासुदेव! आप ही इस नराधम के मृत्यु का उपाय कीजिए। युधिष्ठिर के वचनों को सुनकर अर्जुन ने कहा कि आप के आशीर्वाद से मैं निश्चय ही आज के युद्ध में कर्ण का वध करूगाँ ऐसा मेरा विश्वास है।

अर्जुन द्वारा इस प्रकार की प्रतिज्ञा करने पर भगवान कृष्ण ने युधिष्ठिर से कहा कि हे राजन्! अर्जुन कर्ण के वध के लिए जा रहे हैं। इसलिए इन्हें विजयी होने का आशीर्वाद तथा वध करने की आज्ञा दीजिए। भगवान के कहने पर युधिष्ठिर ने अर्जुन का आलिंगन किया तथा कर्ण वध करने की आज्ञा दी। अर्जुन ने कहा, हे भाई! आज मैं उस पापकर्मा कर्ण का अवश्य ही वध करुगाँ। जिससे आप अत्यन्त व्यथित हैं। वह आज अपने पाप कर्मों का फल अवश्य प्राप्त करेगा। हे राजन् ! कर्ण का वध किये बिना मैं युद्ध भूमि से वापस नही आऊँगा।

दुर्योधन ने मामा शकुनि से कहा संग्राम में भीम का वध करो। शकुनि ने भीम को बाण से प्रहार किया। शकुनि के द्वारा पीडित भीम ने उसके सारथि और अश्वों को मार डाला। पुनः शकुनि के धनुष का खण्डन करके तीक्ष्ण बाणों का प्रयोग करके उसे पीडित किया। दुर्योधन ने उसे रणभूमि से बाहर किया। इस प्रकार सौबल नरेश शकुनि के पराजित होने से दुर्योधन आदि युद्ध भूमि से चले गये। यह देख कर कर्ण ने पाण्डवों की सेना को पराजित किया। धनञ्जय ने भीम से मन्त्रणा करके कर्णाभिमुख प्रस्थान किया। अर्जुन के पराक्रम को देखकर कौरव अत्यन्त चिन्ता मग्न हैं।

दुःशासन ने भीम के साथ युद्ध किया। उसने भीम के धनुष का खण्डन करके सारथि को वेध दिया। कुपित भीम ने भीषण गदा लेकर दुःशासन पर प्रहार किया। गदा प्रहार से दुःशासन भूमि पर गिर पडा। दुःशासन के अश्व, रथ, सारथि सभी विनष्ट हो गये। दुःशासन
को भूमि पर गिरे हुए देख कर भीम वहाँ आया। दुःशासन के द्वारा किये गये अनुचित कार्य उनके स्मृतिपथ में आ गये। क्रुद्ध भीम ने दुर्योधन, कर्ण, कृपाचार्य और द्रौणि से कहा कि आज मैं पापी दुःशासन की हत्या कर रहा हूँ। आप लोग इस की रक्षा करें। भीम ने अपने हाथ में खड्ग लेकर उसकी भुजा को उखाड कर वक्षःस्थल पर महत् बल से ताडन किया, तथा शिर को काट दिया। भीम ने दुःशासन के गर्दन से निकली रक्तधारा का पान कर लिया। भीम इस प्रकार दुःशासन की हत्या करके रुधिर से अञ्जलि को भरकर भयंकर गर्जना करते हुए बोला कि हे वीरो! दुःशासन के विषय में मैं ने जो प्रतिज्ञा की थी उसे आज यहाँ रणभूमि से सत्य कर दिखाया तथा यही युद्ध भूमि में दुर्योधन को काटकर अपनी दूसरी प्रतिज्ञा पूर्ण करके शान्ति प्राप्त करूँगा। भीम द्वारा किये गये इस नाश से भरतवंशी सेना कर्ण को देखते-देखते ही भागने लगी। भीम का पराक्रम देखकर कर्ण भी भयभीत हो गया। उनके सारथी शल्य ने समयोचित वचन कहा, हे राधानन्दन! तुम खेद मत करो, यह तुम्हें शोभा नही दे रहा है। भीम के पराक्रम से सभी राजा भाग रहे हैं दुर्योधन भी भाइयों की मृत्यु से किंकर्त्तव्य विमूढ हो गया है। इस समय अर्जुन आदि पाण्डव वीर अपना लक्ष्य सिद्धकर चुके हैं और अब युद्ध के लिए तुम्हारें ही सामने उपस्थित हो रहे है। हे पुरुष सिंह! धृतराष्ट्र पुत्र दुर्योधन ने युद्ध का सारा भार तुम्हीं पर छोड रखा हैं, इसलिए तुम पुरुषार्थ पर भरोसा करके क्षत्रिय धर्म को सामने रखते हुए अर्जुन पर चढाई करो। शल्य

की बात सुनकर कर्ण अपने हृदय को दृढ करके युद्ध करने के लिए उद्यत हुआ।

सञ्जय ने कहा हे नृपश्रेष्ठ! कर्ण के पुत्र वृषसेन ने भीमसेन पर आक्रमण किया। भीम के कहने पर अर्जुन ने तत्क्षण उस पर चढाई कर दी। वृषसेन कर्ण के समक्ष ही अर्जुन पर बाणों से प्रहार किया। अर्जनु ने वृषसेन को दस बाणों द्वारा मर्म में ताडन किया। पुनः उसके भुजाओं और शिर को काट दिया।

वृषसेन की मत्यु देखकर पुत्र शोक में मग्न कर्ण ने अत्यन्त कोप के साथ अर्जुन से युद्ध करने के लिए शल्य को रथ ले चलने के लिए कहा। शल्य ने रथ को अर्जुन के सामने ले जाकर खडा कर दिया। कर्ण और अर्जुन को आमने-सामने देख कर सभी राजओं ने सिंहनाद किया। दुर्योधन, सौबल, कृपाचार्य आदि महारथियों ने अर्जुन पर बाणों की वर्षा की, परन्तु अर्जुन ने बिना किसी परिश्रम के उन सब का निवारण कर दिया। युद्ध से व्याकुल अश्वत्थामा ने दुर्योधन का हाथ पकड कर कहा कि हे राजन्! युद्ध का भाव त्याग कर पाण्डवों से सन्धि कर लो विरोध से कोई लाभ नहीं है। पितामह भीष्म एवं अस्त्र विद्या के महान पण्डित द्रोणाचार्य भी इस युद्ध में मारे गये। मैं और मेरे मामा कृपाचार्य तो अवध्य हैं, इसीलिए बचे हुए हैं। हे नरेश्वर! यदि मेरी बात नहीं सुनोगे तो निश्चय ही युद्ध में शत्रुओं के हाथ से मारे जाओगे और उस समय तुम्हें बडा ही पाश्चात्ताप होगा। कर्ण नरव्याघ्र अर्जुन को कदापि जीत न सकेगा। अश्वत्थामा द्वारा ऐसे हितकारी वचनों को सुन कर दुर्योधन ने कहा कि हे सखे! तुम सब ठीक कह रहे हो परन्तु दुर्बद्धि भीम ने जिस प्रकार दुःशासन का वध किया, वह मेरे हृदय में स्थित होकर अत्यन्त पीडा दे रहा है। हे मित्र! इस समय अर्जुन महान परिश्रम से थक गया है। अतः अब कर्ण बलपूर्वक उसे मार डालेगा।

इसके उपरान्त कर्ण और अर्जुन का भीषण युद्ध पुनः होने लगा कर्ण ने पार्थ को दस बाणों से प्रहार किया, प्रत्युत्तर में अर्जुन ने भी दस बाणों का प्रयोग किया। कर्ण ने भार्गवास्त्र के द्वारा पाञ्चालों को बींध दिया। पाञ्चालों की व्यथा को देखकर भीम ने अर्जुन से कहा कि कर्ण की उपेक्षा मत करो शीघ्र ही इसका वध कर दो। जनार्दन केशव ने भी भीम का समर्थन किया। तब अर्जुन ने ब्रह्मास्त्र का प्रयोग किया। परन्तु कर्ण ने तत्क्षण ब्रह्मास्त्र का प्रयोग करके उसका निवारण कर दिया कर्ण ने अर्जुन के वध के लिए एक रौद्र बाण को छोडा, जिस बाण में एक नाग ने प्रवेश कर लिया। अग्निमुख बाण को आते हुए देख कर कुशल सारथी भगवान कृष्ण ने अर्जुन के रथ को भूमि में प्रवेश करा दिया, जिससे उस बाण से धनञ्जय का किरीट ही स्पर्श हुआ और वह भूमि पर गिर पडा। कर्ण ने नागराज से पूछा, आप कौन हैं। नागराज ने बताया कि मैं अर्जुन का शत्रु हूँ और उसकी हत्या करना चाहता हूँ। इसलिए आप की सहायता करुँगा। कर्ण ने स्पष्ट रुप से मना कर दिया कि मैं इस प्रकार की सहायता नही चाहता हूँ और अपने बल से शत्रु को जीतूँगा। इस पर नागराज अकेले ही अर्जुन से लडना चाहे जिससे अर्जुन ने नागराज को मार डाला। कर्ण ने महान प्रलयङ्कर बाण का प्रहार करना चाहा, उसी समय भूमि ने कर्ण के रथ के बायें चक्र को ग्रस लिया।

कर्ण को अत्यधिक विषाद प्राप्त हुई। इसी समय अर्जुन ने कर्ण के ऊपर अर्जुन ने घोर रौद्र अस्त्र को छोडना चाहा, कर्ण ने आँसू बहाते हुए अर्जुन से कहा कि हे पार्थ! जब तक मैं भूमिग्रस्त रथ के चक्र को निकालता हूँ तब तक तुम मेरे ऊपर बाण से प्रहार करने के योग्य नही हों। इसलिए मुहूर्त काल की प्रतीक्षा करो। कर्ण के वचनों को सुनकर जनार्दन ने कहा कि हे कर्ण! जब एक वस्त्रा द्रौपदी को दुःशासन, शकुनि, दुर्योधन सहित तुम्हारे द्वारा सभा में लाया गया उस समय धर्म कहाँ था। केशव के वचनों को सुनकर कर्ण लज्जा से अवनत हो गया और पार्थ से पुनः युद्ध करने लगा। केशव ने अर्जुन से कहा कि दिव्यास्त्र का प्रयोग करके कर्ण का वध करो। अर्जुन ने दिव्य आञ्जलिक बाण से रथ पर आरूढ होने के पूर्व शिर को काट दिया। कर्ण के वध से हर्षित पाण्डवों ने शङ्खनाद किया। कौरव की सेना में शोक छा गया तथा अत्यन्त भय के कारण सारी सेना पलायित हो गयी। दुर्योधन ने स्वयं सेना को रोकने का प्रयास किया। सञ्जय द्वारा कर्ण के वध वृत्तान्त को सुनकर धृतरष्ट्र अत्यन्त ही शोक में डूब गये। गान्धारी भी विलाप करती हुई युद्ध में कर्ण की मृत्यु के लिए शोक करने लगी। इस समय शोक से व्याप्त धृतराष्ट्र को सञ्जय ने तथा गान्धारी को विदुर ने सँभाला और अनेक प्रकार से समझाया जिससे राजा धृतराष्ट्र अचेत सा होकर चुप चाप बैठे रह गये।

।। कर्णपर्व कथासार समाप्त ।।